International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-05-2025, Accepted: 14-06-2025, Published: 30-06-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 135-139

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय : एक समीक्षात्मक अध्ययन

मनोज कुमार[1], अरुण कुमार कुलश्रेष्ठ

[1] डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसेज, शिक्षा.संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसेज, शिक्षा.संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

समाज व राष्ट्र के निर्माण का कार्य शिक्षक द्वारा होता है। प्रभावी शिक्षक बनने के लिए न केवल शैक्षणिक ज्ञान एवं कौशल का अधिग्रहण शामिल है, बल्कि अपने स्वयं के मनोवैज्ञानिक परिदृश्य की गहरी समझ भी शामिल है। इस समझ के केंद्र में दो परस्पर जुड़ी हुई अवधारणाऐं हैं संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय। संवेगात्मक बुद्धि के उभरते क्षेत्र संवेगों को प्रभावी ढंग से समझने, प्रबंधित करने एवं उपयोग करने की क्षमता ने व्यक्तिगत कल्याण, पारस्परिक सम्बन्धों और व्यावसायिक सफलता में अपनी अहम भूमिका के लिए महत्वपूर्ण मान्यता प्राप्त की है, विशेष रूप से शिक्षण जैसे मानव–केंद्रित व्यवसाय में। साथ ही आत्म–प्रत्यय, जिसे सामान्य तौर पर मैं कौन हूँ? के बारे में व्यक्ति की धारणा के रूप में परिभाषित किया जाता है, अपने बारे में विश्वास, दृष्टिकोण एवं विचारों की एक बहुआयामी प्रणाली को शामिल करती है। शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिए मजबूत एवं सकारात्मक आत्म–प्रत्यय महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके आत्मविश्वास, कक्षा–प्रबंधन एवं समग्र शिक्षण प्रभावकारिता को गहराई से प्रभावित करता है। शोध अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय की अवधारणा, संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सम्बन्धों की चर्चा की गई है।

मूलषब्दः शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों, संवेगात्मक बुद्धि, आत्म–प्रत्यय एवं शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। समाज व राष्ट्र के निर्माण का कार्य शिक्षक द्वारा होता है। प्रभावी शिक्षक बनने के लिए न केवल शैक्षणिक ज्ञान एवं कौशल का अधिग्रहण शामिल है, बल्कि अपने स्वयं के मनोवैज्ञानिक परिदृश्य की गहरी समझ भी शामिल है। इस समझ के केंद्र में दो परस्पर जुड़ी हुई अवधारणाऐं हैं संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने कराने में इस प्रकार मदद करे कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियायें कर सके जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अच्छे अवसर प्राप्त हो सके। डेनियल गोलमैन (1998). ने संवेगात्मक बुद्धि को इस प्रकार से परिभाषित किया है "संवेगात्मक बुद्धि स्वयं एवं अन्य के संवेगों को पहचानने और उनको अच्छी तरह से प्रबंधित करने की क्षमता है।" यह परिभाषा इस बात पर बल देती है कि हमारे आन्तरिक और सामाजिक विश्व की समझ बनाने और तदनुसार निर्णय लेने के लिए संवेगों के बारे में जानकारी का इस्तेमाल किया जा सकता है। संवेगात्मक बुद्धि के उभरते क्षेत्र संवेगों को प्रभावी ढंग से समझने, प्रबंधित करने एवं उपयोग करने की क्षमता ने व्यक्तिगत कल्याण, पारस्परिक सम्बन्धों और व्यावसायिक सफलता में अपनी अहम भूमिका के लिए महत्वपूर्ण मान्यता प्राप्त की है, विशेष रूप से शिक्षण जैसे मानव–केंद्रित व्यवसाय में।

आत्म–प्रत्यय वह सामान्य पद है, जिसका अर्थ व्यक्ति के गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में उसका मत, एवं व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहार आदि के सम्बन्ध में जो मत रखता है, वही उसका आत्मप्रत्यय है। प्रत्येक व्यक्ति का आत्मप्रत्यय उसके विचारों पर आधारित होता है तथा व्यक्ति के लिए आत्मप्रत्यय बहुत महत्वपूर्ण होता है। आत्मप्रत्यय व्यक्ति का केन्द्र बिन्दु है। आत्म–प्रत्यय, जिसे सामान्य तौर पर मैं कौन हूँ के बारे में एक व्यक्ति की धारणा के रूप में परिभाषित किया जाता है, अपने बारे में विश्वास, दृष्टिकोण और विचारों की एक बहुआयामी प्रणाली को शामिल करती है। गुड (1973). ने आत्म–प्रत्यय को इस प्रकार से परिभाषित किया है "आत्म–प्रत्यय व्यक्ति का स्वयं के प्रति प्रत्यक्षीकरण है, जिसमें उसके जीवन के सन्दर्भ में उसकी योग्यतायें, बाह्याकृति, कार्य का निष्पादन शामिल होता हैं।" शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिए मजबूत एवं सकारात्मक आत्म–प्रत्यय महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके आत्मविश्वास, कक्षा प्रबंधन एवं समग्र शिक्षण प्रभावकारिता को गहराई से प्रभावित करता है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य इन दो महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आयामों के बीच जटिल सम्बन्धों का अध्ययन करना है, विशेष रूप से शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के व्यापक प्रारूप के अन्दर उनके आत्म–प्रत्यय का अध्ययन करना। इस सम्बन्ध में गहराई से अध्ययन करके, हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों स्वयं को किस प्रकार देखते हैं, जिससे उन्हें शिक्षण व्यवसाय की जटिलताओं से निपटने के लिए आवश्यक मनोवैज्ञानिक तैयारी के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सके।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में साहित्यावलोकन निम्न प्रकार है–

बोरसे, चन्द्रकान्त (2012). द्वारा ''स्टडी ऑफ रिलेशनशिप विटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ बी.एड. टीचर ट्रेनी'र्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बी. एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय में सम्बन्ध का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

पुष्पा, एम. एण्ड यशोधरा, के. (2014). द्वारा ''इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ बी.एड. स्टूडेंट्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बी.एड. विद्यार्थियों की संवेगात्मक

बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय में सम्बन्ध का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार बी.एड. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।

सिंह, बी.वी. (2014). द्वारा ''ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस, सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड टीचिंग कॉमपिटन्स ऑफ सेकेन्डरी स्कूल टीचर्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग एवं आयु के आधार पर सरकारी व निजी स्कूल शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शिक्षण क्षमता में अन्तर का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार लिंग एवं आयु के आधार पर निजी स्कूल शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शिक्षण क्षमता का स्तर अधिक पाया गया, सरकारी शिक्षकों की तुलना में।

लाभाने, सी.पी. एण्ड बविस्कर, पी.ए. (2015). द्वारा ''सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंसः ए कंपैरेटिव स्टडी ऑफ आर्ट एण्ड साइंस कॉलेज स्टूडेंट्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य कला एवं विज्ञान कॉलेज विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार कला एवं विज्ञान कॉलेज विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं कला एवं विज्ञान कॉलेज विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

रेशी, एजाज अहमद एण्ड भातो, मोहम्मद (2017). द्वारा ''स्टडी ऑफ सेल्फ–कांसेप्ट, इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सोशल अवेयरनेस ऑफ डिनॉमिनेशनल, प्राइवेट एण्ड गवर्नमेंट सेकेन्डरी स्कूल फीमेल स्टूडेंट्स ऑफ साउथ कश्मीर'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य दक्षिण कश्मीर के सांप्रदाायिक, निजी व सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालय की महिला विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, संवेगात्मक बुद्धि व सामाजिक जागरूकता का अध्ययन करना, दक्षिण कश्मीर के सांप्रदाायिक, निजी व सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालय की महिला विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, संवेगात्मक बुद्धि व सामाजिक जागरूकता का तुलना करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार दक्षिण कश्मीर के सांप्रदाायिक, निजी व सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालय की महिला विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, संवेगात्मक बुद्धि व सामाजिक जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया।

के, रानी (2018). द्वारा ''ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ हायर सेकेन्डरी स्टूडेंट्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया, विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

लुम्बांटोबिंग, रोइदा (2019). द्वारा ''दी रिलेशनशिप विटवीन सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

मिश्रा, आशीष (2019). द्वारा ''ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस, पर्सनैलिटी, क्लासरूम लर्निंग एनवायरमेंट एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट एज प्रिडिक्टरर्स ऑफ अचीवमेंट इन कॉमर्स अमंग हायर सेकेन्डरी स्टूडेंट्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व, कक्षाकक्ष अधिगम वातावरण व आत्म–प्रत्यय के सम्बन्ध में उपलब्धि का अध्ययन करना, लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व, कक्षाकक्ष अधिगम वातावरण व आत्म–प्रत्यय के सम्बन्ध का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व, कक्षाकक्ष अधिगम वातावरण व आत्म–प्रत्यय में सार्थक सहसंबन्ध पाया गया, विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, व्यक्तित्व, कक्षाकक्ष अधिगम वातावरण व आत्म–प्रत्यय उन की शैक्षिक उपलब्धि के लिये भविष्यवक्ता हैं।

हेरेरा, लुका एट अल. (2020). द्वारा ''एकेडमिक अचीवमेंट, सेल्फ–कांसेप्ट, पर्सनैलिटी एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस इन प्राइमरी एजूकेशन. एनालिसिस वय जेंडर एण्ड कल्चरल ग्रुप'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग व सांस्कृतिक समूह के आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि लिंग के आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है सांस्कृतिक समूह के आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है प्राथमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है।

कैसीनो–गार्सिया,एना मारिया एट अल.(2021). द्वारा ''इमोशनल इंटेलिजेंस प्रोफाइलर्स एण्ड सेल्फ–एस्टीम /सेल्फ–कांसेप्टः एन एनालिसिस ऑफ रिलेशनशियर्स इन गिफटेड स्टूडेंट्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का आत्म प्रत्यय व आत्म सम्मान के सम्बन्ध में अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का आत्म प्रत्यय व आत्म सम्मान के साथ सार्थक संबन्ध है प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय व आत्म सम्मान को प्रभावित करती है।

दयाल, सिद्धू एण्ड अग्रवाल, मोनिका (2021). द्वारा ''डायमेंशंर्स ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस, पर्सनैलिटी एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस आमोगर्स्ट मेल एण्ड फीमेल सेकेन्डरी स्कूल एजुकेटरर्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की प्रभावशीलता, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार लिंग के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। लिंग के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों में सार्थक अन्तर पाया गया।

कुमार, पंकज एण्ड अहमद, वसीम (2021). द्वारा ''सेल्फ–कांसेप्ट अमंग टीचर ट्रेनी्र्स ऑफ बी.एड. जनरल एण्ड स्पेशल एजूकेशन'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य सामान्य एवं विशिष्ट बी.एड.शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि सामान्य एवं विशिष्ट बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर होता है।

अब्दुल्ला, अब्दुल हलीम एट अल. (2022). द्वारा ''रिलेशनशिप विटवीन सेल्फ–कांसेप्ट, इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड प्रोब्लम–सॉल्विंग स्किर्ल्स ऑन सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेंट्स ऐटीट्यूड टुवॉर्डस सॉल्विंग अलजेब्रिक प्रोब्लम'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य अलजेब्रिक समस्या समाधान के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, आत्म प्रत्यय, संवेगात्मक बुद्धि एवं समस्या समाधान योग्यता में सम्बन्ध का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं अलजेब्रिक समस्या समाधान के प्रति अभिवृत्ति में नकारात्मक सम्बन्ध पाया गया, विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं अलजेब्रिक समस्या समाधान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया, विद्यार्थियों की संवेगात्मक

बुद्धि एवं अलजेब्रिक समस्या समाधान के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

अल्पियन, यायान एट अल. (2023). द्वारा ''सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस इन रिलेशन विद डिजिटल लिटरेसी'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य आत्म प्रत्यय, संवेगात्मक बुद्धि एवं डिजिटल साहित्य में सम्बन्ध का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार आत्म प्रत्यय, संवेगात्मक बुद्धि एवं डिजिटल साहित्य में सार्थक सम्बन्ध पाया गया। डिजिटल साहित्य को सुधारने में आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि अहम भूमिका होती है।

आर, नटराजा (2023). द्वारा ''ए स्टडी ऑन दी सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ सेकेन्डरी टीचर ट्रेनी्र्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग, स्थानीयता, परिवार, स्कूल स्तर एवं जिला स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का आत्म प्रत्यय औसत है, लिंग, स्थानीयता, परिवार, स्कूल स्तर एवं जिला स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

फैनो, एस्ट्रिड एस. एण्ड बंटुलो, जॉनी एस. (2024). द्वारा ''सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड टीचिंग परफॅर्मेंस एज प्रिडिक्टर्स ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शिक्षण प्रदर्शन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शिक्षण प्रदर्शन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

सालुंके, रेखा बी. (2024). द्वारा ''सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस अमंग एडोलिसेंटर्सः ए सिस्टमैटिक रिव्यु'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि किशोरों के आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

जावेद, जरताशिए कयनात एट अल. (2024). द्वारा ''इफेक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंसः ए सिस्टमैटिक रिव्यु ऑफ क्रॉस कल्चर रिसर्च'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय की भूमिका ज्ञात करना था। निष्कर्ष में पाया गया विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध है, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय का सार्थक प्रभाव होता है।

अग्रवाल, सुरभि (2024). द्वारा ''ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ बी.एड. प्यूपल टीचर्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग के आधार पर बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार लिंग के आधार पर बी.एड. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया।

हेमन्ना, जी.के. एण्ड मोउनिका, गदामचेट्टी (2024). द्वारा ''टू स्टडी दी सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ डी.एड. स्टूडेंट्र्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग एवं आयु के आधार पर डी.एड. विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार लिंग एवं आयु के आधार पर डी.एड. विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

किरियाजोपोलू, मायर्टो एट अल. (2025). द्वारा ''टीचर एजूकेशन स्टूडेंट्र्स इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड टीचर सेल्फ–एफिकसी : ए क्रॉस कल्चरल कंपैरिजन'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रभावकारिता का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रभावकारिता में जटिल व सार्थक सम्बन्ध पाया गया, संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रभावकारिता शिक्षक शिक्षा को प्रभावित करते है।

कुमार, मनोज एण्ड कुलश्रेष्ठ, अरूण कुमार (2025). द्वारा ''शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में आत्म–प्रत्यय का महत्व : एक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिए आत्म–प्रत्यय के महत्व का अध्ययन करना था। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार आत्म–प्रत्यय शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है उनके प्रशिक्षण में अहम भूमिका निभाता है।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय से सम्बन्धित अध्ययनों के परिणामों में काफी भिन्नता है संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय चर का अध्ययन शिक्षण क्षमता, सामाजिक जागरूकता, व्यक्तित्व, कक्षाकक्ष अधिगम वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म सम्मान, शिक्षण प्रभावशीलता, समस्या समाधान कौशल, डिजिटल साहित्य, आत्म प्रभावकारिता आदि चरों के सम्बन्ध में किया गया। शोध अध्ययनों के परिणामों से यह ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय में सम्बन्ध होता है, किन्तु शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य किस प्रकार का सम्बन्ध है? इसी तथ्य के आलोकन के लिये शोधकर्ता ने प्रस्तुत विषय को अध्ययन के लिये चुना है।

संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषा

किसी व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि से आशय उसकी उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार–प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। किस व्यक्ति में कितनी संवेगात्मक बुद्धि है उसके इस स्तर की माप के लिए जिस इकाई का प्रयोग किया जाता हैं उसे संवेगात्मक लब्धि (Emotinal Quotient or EQ) कहा जाता है। यह उसी प्रकार का पैमाना है जैसा बुद्धि–लब्धि (Intelligent Quotient or IQ) के रूप में सामान्य बुद्धि स्तर की माप के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

मेयर एवं सेलोवे (1997), ने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''संवेगात्मक बुद्धि को एक ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिससे चार विभिन्न रूपों में संवेगों को उचित दिशा देने में मदद मिले जैसे संवेग विशेष का प्रत्यक्षीकरण करना, उसका अपनी विचार प्रक्रिया में समन्वय करना, उसे समझना तथा उसका प्रबन्धन करना।''

बार–ऑन (1997), ने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''संवेगात्मक बुद्धि द्वारा वह क्षमता परिवर्तित होती है जिसके माध्यम से दिन प्रतिदिन के पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है और जो व्यक्ति की जिन्दगी में जिसमें पेशेवर तथा व्यक्तिगत धन्धा भी सम्मिलित हैं सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।''

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि एक जन्मजात तथा सार्वभौमिक योग्यता है जो कि व्यक्ति के प्रत्येक क्रियाकलापों को प्रभावित करती है। संवेगात्मक बुद्धि में व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध न केवल अपने संवेगों को समझने से है एवं दूसरे के संवेगों को ठीक रूप से समझने से भी है।

आत्मप्रत्यय का अर्थ एवं परिभाषा

आत्म–प्रत्यय शब्द एक ऐसा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो मनुष्य की स्वयं की धारणा को विकसित करती है, इसमें मैं क्या हूँ? मैं कौन हूँ की प्रतिमा स्वयं में पनपती है। यह स्वयं के समग्र

आकलन को दर्शाती है। दूसरे शब्दों में– आत्म–प्रत्यय शब्द का तात्पर्य उस चित्र या छवि से है जिसे कोई व्यक्ति अपने लिए देखता है। यहाँ आत्म अवधारणा स्वयं के बारे में ज्ञान का संचय है, जैसे शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक विशेषताओं आदि के बारे में विश्वास।

जर्सील्ड (1965), ने आत्म–प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''व्यक्ति की अंदर की दुनिया कहा है। वह इसे एक व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, प्रयासों तथा उम्मीदों, भय तथा कल्पनाओं व अपने महत्व के प्रति दृष्टिकोणों का एक मिश्रित रूप मानता है।'' इस तरह आत्म–प्रत्यय व्यक्ति प्रतिमान के केन्द्र का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। यह व्यक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करता है।

हरलॉक (1979), ने आत्म–प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''आत्म–प्रत्यय वे प्रतिमाएँ है जो व्यक्ति स्वयं अपने संबंध में रखते है आत्म–प्रत्यय में व्यक्ति के वे विश्वास होते है जो एक व्यक्ति अपने शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और संवेगात्मक विशेषताओं के संबंध में रखता है। इसमें आकांक्षाएँ और उपलब्धियां भी सम्मिलित होती है।'' संक्षेप में आत्म–प्रत्यय व्यक्ति की वे प्रतिमाएं होती है जो उसके शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के समन्वय से ही होती है।

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आत्म–प्रत्यय अपने आत्म के प्रति दृष्टिकोण है, आत्म–प्रत्यय वे प्रतिमाएँ है जो व्यक्ति स्वयं अपने सम्बन्ध में रखता है, आत्म–प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों का योग है। अतः आत्म प्रत्यय वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति अपने सम्बन्ध में देखता समझता व जानता है। आत्म व्यक्ति का एक अमूर्त रूप है। इस अमूर्त रूप में उन सब गुणों का समावेश हो जाता है जिनके सम्बन्ध में व्यक्ति स्वयं सचेत है।

संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय

संवेगात्मक बुद्धि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में आत्म–प्रत्यय के विकास में एक महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी भूमिका निभाती है। आत्म–प्रत्यय किसी व्यक्ति की स्वंय के बारे में धारणा या दृष्टिकोण को सन्दर्भित करती है, जिसमें उनकी अपनी विशेषताओं, क्षमताओं एवं मूल्यों के बारे में उनकी धारणाएँ शामिल होती हैं। संवेगात्मक बुद्धि इस बात को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी इस आत्म–प्रत्यय को कैसे बनाते हैं, जो उनके आत्मविश्वास, व्यवसायिक पहचान एवं सम्पूर्ण कल्याण को प्रभावित करती है।

अतः शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का संवेगात्मक विकास, एक सकारात्मक आत्म–प्रत्यय को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है, इसका परिणाम यह हो सकता है कि समाज को अधिक प्रभावी, लचीले एवं कौशलपूर्ण शिक्षक उपलब्ध हो सकते है। शोध अध्ययनों के परिणाम से यह ज्ञात होता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है। यह परिणाम अन्य कई शोधकर्ता के निष्कर्षों द्वारा समर्थित है। बोरसे, चन्द्रकान्त (2012), पुष्पा, एम. एण्ड यशोधरा, के. (2014), ने शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया। मिश्रा, आशीष (2019), जावेद, जरताशिए कयनात एट अल. (2024), ने संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया। फैनो, एस्ट्रिड एस. एण्ड बंटुलो, जॉनी एस. (2024), ने शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया। अर्थात हम यह कह सकते है कि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सार्थक सम्बन्ध होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि समाज के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति का उत्तम व्यवहार होना आवश्यकता है। व्यक्ति के उत्तम व्यवहार के लिये दो मनोवैज्ञानिक आयाम संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय है। व्यक्ति के मानसिक विकास में संवेगों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सुखद संवेगात्मक स्थिति होने पर मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। साथ ही उसकी सभी मानसिक शक्तियाँ एवं क्षमताएँ अधिक सक्रियता से कार्य करने में सहायता करती हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य हेतु सकारात्मक संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धि शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिए केवल एक कौशल मात्र नहीं है यह एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक योग्यता है जो प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने, सार्थक सम्बन्ध बनाने, व्यवसाय की मांगों को प्रबंधित करने एवं अपने विद्यार्थियों के जीवन में गहरा और सकारात्मक अन्तर लाने की उनकी क्षमता को सीधे प्रभावित करती है। इसलिए, इसका विकास सभी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का केंद्रीय बिन्दु होना चाहिए।

दूसरा आयाम आत्म–प्रत्यय है। आत्म–प्रत्यय को हम इस प्रकार समझ सकते है कि व्यक्ति अपने बारे में क्या विचार या सोच रखता है। वही उसका आत्म–प्रत्यय है। अपने स्वयं के बारे में जो छवि मस्तिष्क में बनती है वही व्यक्ति का आत्म–प्रत्यय कहलाता है। व्यक्ति का आत्म वह है जिसके प्रति हम तत्काल सजग होते है। हम इसे अपने जीवन के केन्द्रीय व निजी क्षेत्र के रूप में मानते है। यह हमारी चेतना, हमारे व्यक्तित्व तथा हमारे संगठन का महत्वपूर्ण भाग है। इस तरह यह हमारे जीवन का केन्द्र है। अतः स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी के जीवन में आत्म–प्रत्यय का बड़ा महत्व होता है। उसके शैक्षिक जीवन, व्यावहारिक जीवन तथा व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से आत्म–प्रत्यय अत्यन्त उपयोगी तथा महत्वपूर्ण होता हैं। शिक्षक, माता पिता अपने स्नेह एवं आत्मीयतापूर्ण व्यवहार, अधिगम व अभिप्रेरणा के द्वारा विद्यार्थी में उचित आत्म–प्रत्यय का विकास कर सकते हैं। शिक्षण कार्य में शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के लिए उच्च आत्म–प्रत्यय महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके शैक्षिक प्रदर्शन, शिक्षण क्षमता, शिक्षण दक्षता एवं उनके व्यवसाय में समग्र सफलता को प्रभावित करता है। सकारात्मक आत्म–प्रत्यय उनके आत्मविश्वास एवं उनकी क्षमताओं में विश्वास को बढ़ावा देता है, जिससे उन्हें बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि और बेहतर शिक्षण प्रभावशीलता प्राप्त होती है। अतः शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय की अवधारणा, संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रत्यय के मध्य सम्बन्धों की चर्चा की गई है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमार, मनोज एण्ड कुलश्रेष्ठ, अरूण कुमार (2025). शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में आत्म–प्रत्यय का महत्व : एक अध्ययन.दी एकेडमिक जर्नल, 3(5), 2583-973X. DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15657335
2. किरियाजोपोलू, मायर्टो एट अल. (2025). टीचर एजूकेशन स्टूडेंट्स इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड टीचर सेल्फ–एफिकसी : ए क्रॉस कल्चरल कंपैरिजन. स्पिंजर करंट साइकोलॉजी, 44, 1206–1218.https://doi.org/10.1007/s12144-024-06999-y
3. हेमन्ना, जी.के. एण्ड मोउनिका, गदामचेट्टी (2024). टू स्टडी दी सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ डी.एड. स्टूडेंट्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन्स एण्ड रिव्यु, 5(1), 2582–7421-https://www.ijrpr.com
4. अग्रवाल, सुरभि (2024). ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ बी.एड. प्यूपल टीचर्स.जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीर्स एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च, 11(2), 2349–5162.https://www.jetir.org
5. जावेद, जरताशिए कयनात एट अल. (2024). इफेक्ट ऑफ

इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंसः ए सिस्टमैटिक रिव्यु ऑफ क्रॉस कल्चर रिसर्च. बुलेटिन ऑफ बिजनेस एण्ड इकोनॉमिक्स, 13(2), 189–199. https://doi.org/10.61506/01.00315

6. सालुंके, रेखा बी. (2024). सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस अमंग एडोलिसेंटर्सः ए सिस्टमैटिक रिव्यु. दी इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 12(2), 2348–5396.https://DOI: 10.25215/1202.188
7. फैनो, एस्ट्रिड एस. एण्ड बंटुलो, जॉनी एस. (2024). सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड टीचिंग परफॉर्मेंस एज प्रिडिक्टर्स ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस. साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशनलः ए मल्टीडिसीप्लिनरी जर्नल, 25(1), 2822–4353. https://doi:10.5281/zenodo.13742399
8. आर, नटराजा (2023). ए स्टडी ऑन दी सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ सेकेन्डरी टीचर ट्रेनी्र्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट, 11(1), 2320–2882.https:// www.ijcrt.org
9. अल्पियन, यायान एट अल. (2023). सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस इन रिलेशन विद डिजिटल लिटरेसी. जर्नल ऑफ नॉनफोरमल एजुकेशन, 9(1), 2528–4541. https://journal.unnes.ac.id/nju/index.php/jne
10. अब्दुल्ला, अब्दुल हलीम एट अल. (2022). रिलेशनशिप विटवीन सेल्फ–कांसेप्ट, इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड प्रोब्लम–सॉल्विंग स्किर्ल्स ऑन सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेंर्ट्स ऐटीट्यूड टुवॉर्डर्स सॉल्विंग अलजेब्रिक प्रोब्लम. जर्नल ऑफ सस्टेनेबिलिटी, 14, 14402. https://doi.org/10.3390/su142114402
11. कुमार, पंकज एण्ड अहमद, वसीम (2021). सेल्फ–कांसेप्ट अमंग टीचर ट्रेनी्र्स ऑफ बी.एड. जनरल एण्ड स्पेशल एजूकेशन. इंडियन जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी, 12(1), 2321–368X. https://www.researchgate.net/publication/350781849
12. दयाल, सिद्धू एण्ड अग्रवाल, मोनिका (2021). डायमेंशंर्स ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस, पर्सनैलिटी एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस आमोगर्स्ट मेल एण्ड फीमेल सेकेन्डरी स्कूल एजुकेटरर्स. दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट–फैकल्टी ऑफ एजुकेशन रिसर्च एब्स्ट्रेक्ट एण्ड आर्टिकल ए रिसर्च जर्नल इन एजुकेशन(एफओईआरएए), एनुअल इश्यू 2021. https://www.dei.ac.in
13. कैसीनो–गार्सिया,एना मारिया एट अल.(2021). इमोशनल इंटेलिजेंस प्रोफाइलर्स एण्ड सेल्फ–एस्टीम /सेल्फ–कांसेप्टः एन एनालिसिस ऑफ रिलेशनशियर्स इन गिफटेड स्टूडेंर्ट्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरमेंटल रिसर्च एण्ड पब्लिक हेल्थ, 18(3), 1803–1006.https:// doi.org/10.3390/ijerph18031006
14. हेरेरा, लुका एट अल. (2020). एकेडमिक अचीवमेंट, सेल्फ–कांसेप्ट, पर्सनैलिटी एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस इन प्राइमरी एजूकेशन. एनालिसिस वय जेंडर एण्ड कल्चरल ग्रुप. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 10(1), 3075. https://doi: 10.3389/fpsyg.2019.03075
15. मिश्रा, आशीष (2019). ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस, पर्सनैलिटी, क्लासरूम लर्निंग एनवायरमेंट एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट एज प्रिडिक्टरर्स ऑफ अचीवमेंट इन कॉमर्स अमंग हायर सेकेन्डरी स्टूडेंर्ट्स. रिसर्च एण्ड स्टडीज : ए पीयर रिव्यूड जर्नल ऑफ एजूकेशन, 68–71, 0084–621.
16. लुम्बांटोबिंग, रोइदा (2019). दी रिलेशनशिप विटवीन सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस. एडवन्स इन सोशल साइंस, एजूकेशन एण्ड ह्यूमैनिटी रिसर्च, 414. http://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/.
17. के, रानी (2018). ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ हायर सेकेन्डरी स्टूडेंर्ट्स. डेलाइब्रेटिव रिसर्च, 37(1), 124–128. https://www.search.proquest.com
18. रेशी, एजाज अहमद एण्ड भातो, मोहम्मद (2017). स्टडी ऑफ सेल्फ–कांसेप्ट, इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सोशल अवेयरनेस ऑफ डिनॉमिनेशनल, प्राइवेट एण्ड गवर्नमेंट सेकेन्डरी स्कूल फीमेल स्टूडेंर्ट्स ऑफ साउथ कश्मीर. एम. फिल. इनएजूकेशन डिसर्टेशन, https://shodhganga.inflibnet.ac.in
19. लाभाने, सी.पी. एण्ड बविस्कर, पी.ए. (2015). सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंसः ए कंपैरेटिव स्टडी ऑफ आर्ट एण्ड साइंस कॉलेज स्टूडेंर्ट्स. दी इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 2(2), 2348–5396. http://www.ijip.in
20. सिंह, बी.वी. (2014). ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस, सेल्फ–कांसेप्ट एण्ड टीचिंग कॉमपिटन्स ऑफ सेकेन्डरी स्कूल टीचर्स. स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी साइंस एण्ड इंग्लिश लैंग्वेज, 1(6), 2348–3083. https://www.srjis.com
21. पुष्पा, एम. एण्ड यशोधरा, के. (2014). इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ बी.एड. स्टूडेंर्ट्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलॉजीकल रिसर्च (आईजेईपीआर), 3(2), 23–29.
22. बोरसे, चन्द्रकान्त (2012). स्टडी ऑफ रिलेशनशिप विटवीन इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ–कांसेप्ट ऑफ बी.एड. टीचर ट्रेनी्र्स. इलेक्ट्रॉनिक इण्टरनेशनल इण्टरडिसीप्लिनरी रिसर्च जर्नल, 1(3), 2277–2456. https://www.aarhat.com
23. मंगल, एस.के. (2022). शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड पब्लिकेशन्स, दिल्ली
24. गुप्ता, एस.पी. (2019). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद
25. कौल, लोकेश (2012). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, द्वितीय पुनर्मुद्रण, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., दिल्ली
26. माथुर, एस.एस. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा